اکتوبر ۲۰۰۹ء

ماہنامہ شعاع عمل لکھنؤ

قَالَ اللّٰهُ تَبَارَکَ وَتَعَالٰی قَدْ جَاءَ کُمْ مِنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَ کِتَابٌ مُبِیْنٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب





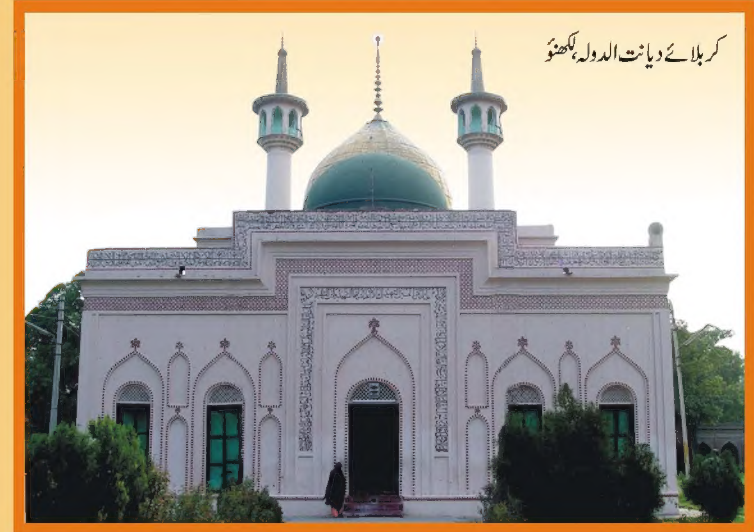
موسسۂ نور ہدایت، حسینیہ غفرانمآبؒ، چوک، لکھنؤ-۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2008-10
P.O. Chowk, Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

October 2009

SHUA-E-AMAL
Lucknow

शुआ-ए-अमल
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ





NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Phone : 2252230

वर्ष-6

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2008-10
P.O. Chowk. Dispatch Date: 2 & 6 of every month

अंक 4

अक्टूबर - 2009

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल
"लखनऊ"

संरक्षक

मौलाना सै. कल्बे जवाद नक़वी साहब

सम्पादक

सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

वार्षिक - 200 रु   मिलने का पता   क़ीमत - 20 रु

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत ग़ुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ - 3 (उ.प्र.) भारत। फोन न० 0522-2252230

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ-ए-अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर-ए-हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ-3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै० मुस्तफा हुसैन नक़वी 'असीफ जाएसी'।



R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526



Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10



WEBSITE:
www.noorehidayat.com
www.al-ijtihaad.com



E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

ज़रे सालाना

1- यूरोप, अमरीका, कनाडाः
80 अमरीकी डालर
2- ख़लीजी मुमालिकः
60 अमरीकी डालर
3- एशिया, पाकिस्तानः
40 अमरीकी डालर
4- पाकिस्तान ज़मीनी डाकः
20 अमरीकी डालर

लाइफ़ मेम्बरशिपः 4000/-

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

अक्टूबर-2009ई०

शव्वालुल मुकर्रम - ज़ीक़ादतुल हराम 1430हि०

हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः

❀ अपना वक़्त इधर-उधर की बातों में बर्बाद न करो, क्योंकि तुम्हारे साथ ऐसे लोग हैं जो तुम्हारी हर चीज़ को लिख रहे हैं।

❀ ऐ लोगों! अपनी ज़बान को रोको और अच्छे अन्दाज़ से सलाम करो।

फ़िलिस्तीन इस्लामी दुनिया के जिस्म का हिस्सा और अटूट अंग है

आलमी हिमायते फ़िलस्तीन कान्फ्रेंस में आयतुल्लाहिल उज़्मा सैय्यद अली ख़ामेना-ई के ख़िताब के कुछ हिस्से

"ग़ज़्ज़ा के तारीख़ी वाक़िए में इस्राईली मुजरिमों ने हौलनाक जुर्म किये हैं जिनमें बड़े पैमाने पर आम शहरियों का क़त्ले आम, घरों, मदरसों, अस्पतालों, मस्जिदों की तबाही व वीरानी, फ़ासफ़ोरस बमों और दुसरे प्रतिबन्धित हथियारों का इस्तेमाल, खाने और डाक्टरी वसाएल और दवाओं के आने-जाने पर पाबन्दी, दो साल से सरहदों को घेरना और बहुत से दूसरे जुर्मों ने साबित कर दिया कि इस्राईल अपनी उसी शुरुआती जंगली आदतों और ख़सलतों पर बाक़ी है उसकी जंगली आदतें उसी तरह बाक़ी हैं जिस तरह उसने डेरा यासीन, सबरा और शतीला कैम्पों में फ़िलस्तीनियों का ख़ून बहाया था उसी तरह आज भी फिलिस्तीनियों का ख़ून बहाने पर तुला है इस्राईल जुल्म और सितम का आदी है वह आज भी फ़िलस्तीनियों को जुल्म और सितम का निशाना बना रहा है इस्राईल के दिल में अब भी वही जुल्म और वही तारीकी मौजूद है इस्राईल अपनी उन्हीं पॉलीसियों पर अमल कर रहा है बल्कि आज नये-नये हथियारों की वजह से उसके जुर्म, ज़बरदस्ती और जुल्मो फ़साद का दायरा और बढ़ गया है।"

"फिलस्तीन पर ज़बरदस्ती क़ब्ज़े का बहाना बनाये जाने वाले होलोकास्ट के बारे में सवाल और तहक़ीक़ से मुताल्लिक़ मग़रिबी व सहयूनी इबलाग़ के ज़रियों और सहयूनिज़्म की हामी हुकूमतों की नाराज़गी और बर्दाश्त न करना शको शुब्हें और डांवांडोल होने की निशानी है। इस वक़्त आलमी आम राय के सामने सहयूनी हुकूमत की शुरु से अब तक की काली तारीख़ की सबसे बुरी शक्ल मौजूद है और इसकी पैदाईश व परवरिश के बारे में ज़्यादा संजीदगी से सवाल उठने लगे हैं। पूर्वी एशिया से लातीनी अमरीका तक सहयूनी हुकूमत पर होने वाले फ़ितरी और बेमिसाल एतेराज़ों से इसी तरह दुनिया के एक सौ बीस मुल्क यूरोप के साथ बिर्टेन में जो इस "शजरे ख़बीसा" (बदतरीन पेड़) के पैदा होने की जगह है, मुज़ाहेरों का सिलसिला और 33 रोज़ा दिवसीय की जंग के दौरान इस्लामी मुज़ाहेमत के लिए हमदर्दी और हिमायत का इज़हार इस बात का गवाह है कि सहयूनिज़्म के ख़िलाफ़ आलमी सतह पर दिफ़ाअ़ (Defence) शुरु हो गया है जिसकी मिसाल पिछले साठ बरसों में कहीं नहीं मिलती। ये कहना ग़लत न होगा कि लेबनान और फ़िलस्तीन की इस्लामी मुज़ाहेमत दुनिया के ज़मीर को जगाने में कामयाब हुई है।"

"वह लोग जिन्होंने इस्राईल के नाक़ाबिले शिकस्त होने का हौव्वा खड़ा करके उसके सामने सर झुकाने का इरादा कर लिया, चाहे वह लोग जिन्होंने इस्राईल की दूसरी और तीसरी नस्ल के सियासतमदारों को जुर्म व जिनायत से पाक व साफ़ करके उनके साथ पुरअमन ज़िन्दगी बसर करने का बातिल ख़्वाब देख रखा था उन्हें अब अपनी ग़लती और ख़ता का एहसास हो जाना चाहिए।"

"फ़िलस्तीन के मसले के सिलसिले में कुछ लोगों को एक बड़ी ग़लतफ़हमी ये हो गयी है कि इस्राईल नाम का एक मुल्क साठ साला हक़ीक़त है इसलिए उसे क़ुबूल कर लेना चाहिए। मेरी समझ में ये नहीं आता कि ये लोग आँखों के सामने मौजूद दूसरी हक़ीक़तों से सबक़

क्यों नहीं लेते? बालकान, क़फ़्क़ाज़ और दक्षिण पश्चिमी एशिया के मुल्कों ने 80 साल तक अपनी पहचान से महरूमी और पिछली सोवेत यूनियन का हिस्सा रहने के बाद क्या अपनी हक़ीक़ी पहचान दोबारा हासिल नहीं कर ली? तो फिर फिलस्तीन जो इस्लामी दुनिया के जिस्म का हिस्सा और अटूट अंग है, इस्लामी और अरब मुल्क अपनी पहचान दोबारा क्यों हासिल नहीं कर सकता? और फिलस्तीनी नौजवान जो सबसे ज़्यादा बाहोश, बहादर और मज़बूत अरब नौजवान हैं इस ज़ालिमाना हक़ीक़त पर ग़लबा क्यों हासिल नहीं कर सकते?

एक और बड़ा धोका ये ख़याल किया जाता है कि मिल्लते फ़िलस्तीन के लिए अकेला नजात का रास्ता बातचीत हैं! बातचीत किसके साथ! ताक़त की ज़बान के अलावा कोई उसूली बात न समझने वाली ग़ासिब, मुनहरिफ़ और शर पसन्द सहयूनी हुकूमत के साथ? जिन लोगों ने इस बचकाना ख़याल और फ़रेब से खुद को मुतमइन कर लिया, उन्हें क्या मिला? सहयूनियों से खुदमुख़्तार इन्तिज़ामिया की शक्ल में उन्हें जो कुछ मिला उसकी ज़िल्लत भरी और तौहीन आमेज़ माहियत से नज़र हटाते हुए भी, सबसे पहली बात ये है कि इसके लिए तक़रीबन पूरी फ़िलस्तीनी सरज़मीन पर ग़ासिब हुकूमत की मालिकियत मानने की भारी क़ीमत अदा करना पड़ी।''

''संयुक्त राष्ट्र संघ या तसल्लुत पसन्द ताक़तों और ख़ासकर सहयूनी हुकूमत की चापलूसी और तलवे चाटने के ज़रिये फिलस्तीन को नजात नहीं दिलायी जा सकती। नजात का अकेला रास्ता इस्तेक़ामत और पायदारी है। फिलस्तीनियों का इत्तेहाद और कलम-ए-तौहीद है जो जेहादी तहरीक का कभी न ख़त्म होने वाला ख़ज़ाना है। इस डटे और क़ायम रहने की बुनियाद, एक तरफ़ फ़िलस्तीन के अन्दर और बाहर मुजाहिद फ़िलस्तीनी तन्ज़ीमें और फिलस्तीन के मोमिन और मुजाहिद अवाम हैं तो दूसरी तरफ़ पूरी दुनिया की मुस्लिम क़ौमें और हुकूमतें ख़ासकर उलमा और दानिश्वर, सियासी शख़सियतें और युनिवर्सिटियों से जुड़े लोग हैं। अगर ये दोनों बुनियादें अपनी जगह पर डटी रहें तो कोई शक नहीं कि जागे हुए ज़मीर, ज़हन और फ़िक्रें जो साम्राज और सहयूनिज़्म के मीडिया के जादुई प्रोपेगण्डों से नहीं बदले हैं दुनिया के हर गोशे से हक़परस्त और मज़लूम की मदद के लिए आगे आयेंगे और साम्राजी निज़ाम को उनकी फ़िक्रों, ख़यालों, जज़्बातों, एहसासों, अमल और इक़दामों के तूफ़ान का सामना करना होगा।''

मग़रिबी दुनिया को याद रखना चाहिए कि इस हद के रास्ते को क़ुबूल न करना, जमहूरियत का पास और लेहाज़ रखने की निशानी है जिसका वह हर पल दम भरते रहते हैं। ये भी उनके लिए पोल खोल देने वाला इम्तिहान साबित होगा। इससे पहले भी उनका इम्तिहान फ़िलस्तीन में हुआ जब मग़रिबी उरदुन और ग़ज़्ज़ा के इलाक़े के चुनाव के नतीजे को जो हमास के इक़्तेदार में आने की सूरत में सामने आये, क़ुबूल करने से इन्होंने इनकार कर दिया। जो लोग जमहूरियत को सिर्फ़ इस शक्ल में क़ुबूल करते हैं, जब तक इसके नतीजे उनकी चाहत के हिसाब से हों, हक़ीक़त में जंग पसन्द करने वाले और लड़ाई जारी रखने वाले हैं। अबर अगर वह अमन व भाईचारे के बात करते हैं तो वह ग़लत बात और झूठ बोलने वालों के सिवा कुछ नहीं।

इस वक़्त ग़ज़्ज़ा की नई तामीर का मसला फ़िलस्तीन के हंगामी मसलों में से है। हमास की हुकूमत जो खुले तौर पर बहुमत से इक़्तेदार में आयी है और सहयूनी हुकूमत को हराने वाली, जिसके डटे रहने की दास्तान फ़िलस्तीन की पिछले सौ साल की तारीख़ का सबसे सुनहरा ज़माना है, उसे नयी तामीर से मुताल्लिक़ सभी सरगर्मियों और इक़दामात की बुनियाद होना चाहिए। मुनासिब होगा कि मिस्री भाई मदद के लिए रास्तों को खोल दें और मुस्लिम मुल्क और क़ौमों को इस सबसे अहम अमल में अपना फ़रीज़ा पूरा करने दें।''



यौमुल कुद्स

- क़िब्ल-ए-अव्वल बैतुल मुक़द्दस की बंदिश मुसलमानों के सामने कड़वी सच्चाईयों में से एक है।
- एक दीनी ज़िम्मेदारी के उनवान से फिलस्तीनी अवाम की हिमायत करना दुनिया के सभी मुसलमानों पर वाजिब है।
- फिलस्तीनी अवाम की अज़ीम इन्क़ेलाबी तहरीक जारी रहेगी।
- आज का फ़िलस्तीन एक ग़रीब और मज़लूम अवाम की बहादुरी का मैदान है।
- रोज़े कुद्स का एहतेराम करें और इसे साल का सबसे अहम दिन समझें।
- आलमी यौमे कुद्स के जुलूसों में मुसलमानों की ज़्यादा से ज़्यादा शिरकत फ़िलस्तीनी मुजाहिदों को ताक़त और हौसला देगी।
- इमाम खुमैनी के चाहने वाले हमेशा फ़िलस्तीनियों की हिमायत करने वाले और उनके दुश्मनों के दुश्मन होते हैं।
- हमारी ईमान वाली और शहादत चाहने वाली क़ौम इस्राईल के ज़ुल्म और सितम को बर्दाश्त नहीं करेगी।
- यौमुल कुद्स फ़िलस्तीनी क़ौम के मुक़द्दस और इस्लामी मक़सदों और अरमानों का दिन है।
- अगर अमरीका इस्राईल की मदद करने वाला न होता तो इस्राईल लम्हों में बर्बाद हो जाता।
- दुनिया में इस्राईल से ज़्यादा नीच और उससे ज़्यादा ग़ैर इन्सानी निज़ाम कोई नहीं।
- फ़िलस्तीन का मसला किसी मज़लूम और अपने ही मुल्क में बेघर होने वाली क़ौम का मसला है।
- यौमे कुद्स को बैतुल मुक़द्दस की आज़ादी के लिए तैयार होने का दिन होना चाहिए।
- रोज़े कुद्स को सभी मुसलमान ग़नीमत समझें और फ़िलस्तीन के मसले को ज़िन्दा रखें।
- सहयूनियों और सहयूनी ताक़तों से जेहाद वाजिब है।
- आज फ़िलस्तीन की नई नस्ल इस्लाम-ईमान और ख़ुदा पर भरोसे के साथ लड़ रही है।
- फ़िलस्तीनी जवानों का डटे रहना बहुत सच्चाई और उम्मीद के साथ है।
- फ़िलस्तीन की आज़ादी के सिलसिले में फ़िलस्तीनियों की मदद करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है।
- हर हुकूमत और हर क़ौम पर वाजिब है कि वह सच्चे दिल के साथ फ़िलस्तीन के मसले को अपने अहम और बुनियादी मसलों का हिस्सा समझे।
- मुसलमानों पर वाजिब है कि वह फ़िलस्तीन की मिल्लत के आज़ाद हो जाने तक एक लम्हे के लिए भी कोशिश और जिद्दोजहद से अलग न हटे।
- रोज़े कुद्स असल में हक़ और बातिल के अलग-अलग होने का दिन है।
- मैं उम्मत से यौमुल कुद्स को भरपूर तरीक़े से मनाने की अपील करता हूँ।
- यौमुल कुद्स इस्लामी दुनिया के लिए बहुत ही अहम और क़ीमती साबित होगा।
- मुसलमान मिल्लत यौमुल कुद्स की रैली में शिरकत करके उसको ज़िन्दा रखेगी।
- यौमुल कुद्स इस्लामी दुनिया का एक बहुत ही ख़ास दिन है।
- फ़िलस्तीन का मसला आलमे इस्लाम का सबसे अहम बैनुलअक़वामी मसला है।
- इस्राईल के नासूर फोड़े का इलाज सिर्फ़ यही मक़सद और जंग है। ❑❑❑

(उर्दू पत्रिका ''अल-कुद्स'' से)

इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम

प्रोफ़ेसर अल्लामा अली मुहम्मद नक़वी साहब क़िब्ला
अनुवादकः मोहतरमा बिन्ते ज़हरा नक़वी ''नदल हिन्दी'' साहेबा

मामून की सियासत का तजज़िया
इमाम रिज़ा[अ०] और उनका तरीक़-ए-कार

अइम्म-ए-इतरत चूँकि दुनिया के हर हिस्से और हर ज़माने के लिए नमूना हैं। इसलिए ख़ुदावन्देआलम ने उन्हें हर तरह के हालात से दोचार रखा ताकि हर हालत में उनका किरदार, तरीक़-ए-कार और हिक्मते अमली आने वाली नस्लों के लिए एक नमूना रहे। इसलिए इस ताबनाक सिलसिल-ए-इस्मत की हर फ़र्द ख़ास तरह के मुख़तलिफ़ हालात से दोचार रहे और उन्होंने मुख़तलिफ़ क़िस्म के हालात में हक़ और हक़ीक़त की हिफ़ाज़त और ''पैग़ाम'' की तबलीग़ के लिए मख़सूस हिक्मते अमली को चुना। अइम्मा की हिक्मते अमली को समझने और अपने लिये उनसे रहनुमाई हासिल करने के लिए हमें चाहिए कि दुश्मन के हालात, तरीक़े और हिक्मते अमली के मुक़ाबले में अपने अइम्मा की हिक्मते अमली का तजज़िया करें।

अइम्म-ए-इसमत के दरमियान जिन हालात से इमाम रिज़ा[अ०] दोचार रहे वह सख़्त क़ाबिले ग़ौर हैं क्योंकि एक तरफ ''मक्र'' बातिल है और दूसरी तरफ ''मक्कारी का जवाब''।

मामून की चाल

मामून इमाम रिज़ा[अ०] को जो ''इस्लामी तहरीक'' के अलमबरदार हैं अपना वली अहद क्यों नामज़द करता है और ये हुक्म जारी करता है कि अब्बासी ख़िलाफ़त के तमाम ख़तीब इमाम रिज़ा के नाम का ख़ुतबा पढ़ा करें? मामून इमाम रिज़ा[अ०] को क्यों मदीने से बुलवाकर अपनी जानशीनी की पेशकश करता है और क्यों उन्हें मजबूर करता है कि वह उसे क़ुबूल करें।

पहला नुकता जो हम इस इक़्दाम से समझ सकते हैं वह इमाम[अ०] के असरात और उनके इज्तेमाई सियासी किरदार की अहमियत है। क्योंकि मामून जो दुनिया का एक साहेबे इक़्तेदार बादशाह था। जब तक इमाम[अ०] के सियासी इज्तेमाई और जंगी तवानाई के वज़्न को समझ न लेता इमाम[अ०] के आगे जिनको वह अपने निज़ाम का दुश्मन समझता था हथियार नहीं डाल सकता था। नामुमकिन था कि मामून एक गोशा नशीन फ़र्द को जो सियासत से बेताल्लुक़ अकेले मदीने की गली के एक घर के किसी गोशे में या मस्जिदे नबवी में वाज़ या रूहानी व मानवी फ़राएज़ को अन्जाम देने लगे हों मदीने से राजधानी में बुलवाये और उसे अपने निज़ामे ख़िलाफ़त का दुश्मन गिनते हुए उसके आगे हथियार डाल दे। हमको ये देखना है कि इस अमल से मामून की नियत क्या थी?

उस ज़माने के सरकारी तारीख़ लिखने वालों ने ये ज़ाहिर करने की कोशिश की है कि मामून का ये काम हक़ परस्ती और इन्साफ का नतीजा था। जैसे तबरी लिखता है कि ''इमाम रिज़ा[अ०] की जानशीनी के एलान से मामून का इरादा ये था कि- मामून ने देखा कि बनी अब्बास और औलादे अली में इमाम रिज़ा[अ०] से बढ़कर मुत्तक़ी और इल्म वाला कोई नहीं है। याक़ूबी और इब्ने असीर इसी नज़रिये की तकरार करते हैं।

(इब्ने असीर, अलकामिल, जि-1, पेज-111/याक़ूबी, जि-3, पे-176)

अस्फ़हानी भी यही ज़ाहिर करना चाहते हैं कि मामून सच्ची नियत ये ख़िलाफ़त का ओहदा इमाम रिज़ा[अ०] के नाम मुन्तक़िल करना चाहता था। वह लिखते हैं मामून के साथ अमीन की ख़ूँन भरी जंग के दौरान मामून ने अहद किया था कि अगर वह जीतेगा तो

ख़िलाफ़त को औलादे अली[अ०] की सबसे अफ़ज़ल फ़र्द के नाम मुन्तक़िल कर देगा और चूँकि इमाम रिज़ा[अ०] सबसे अफ़ज़ल थे इसलिए मामून ने ख़िलाफ़त उनकी तरफ़ मुन्तक़िल करने की कोशिश की।

मगर हक़ीक़त ये है कि कुल्ली मक़ासिद और आम फ़ायदे के लेहाज़ से मामून में और दूसरे ख़ुलफ़ा में कोई फ़र्क़ नहीं था। वह हवस का बन्दा और साहेबे क़ुव्वत और सरवत था और उसका आख़री मक़सद ज़ाती इक़्तेदार का इस्तेहकाम था और इस मामले में उसने अपने भाई के क़त्ल से भी गुरेज़ न किया।

इमाम रिज़ा[अ०] को अपना जानशीन और ख़लीफ़ा नामज़द करना भी अपने इक़्तेदार की मज़बूती और अपने दुश्मनों को कमज़ोर करने की एक हिक्मते अमली थी। शिया मुफ़क्किरीन ने हमेशा इस बात को मानने से इन्कार किया है कि मामून का ये फैसला सिद्क़े नियत पर मबनी था और ये वाज़ेह किया है कि मामून का एक इक़दाम सिर्फ़ सियासी मसलेहत की बुनियाद पर था। और तारीख़ लिखने वालों का वह गिरोह जो मामून के इस फैसल को एक सच्चा फ़ैसला ज़ाहिर करता है, उसका मक़सद मामून को इन्साफ़ पसन्द और हक़ दोस्त ज़ाहिर करना है। और उनकी कोशिश मामून के मन्सूबे के ऐन मुताबिक़ है। मक़ासिद के एतेबार से मामून और दीगर ख़ुलफ़ा में कोई फ़र्क़ न था। सब इक़्तेदार के दीवाने थे। मगर दो बातों में वह अपने पिछले ख़लीफ़ाओं से अलग था।

पहले ये कि मामून दूसरे सभी ख़लीफ़ाओं के मुक़ाबले में बहुत ज़्यादा चालाक था और इस लेहाज़ से उसे अब्बासी मुआविया कहा जा सकता है। जिस तरह मुआविया हुकूमत के लिए ताक़त को सियासत से मिला दिया था, उसी तरह मामून भी ताक़त के साथ सियासत को इस्तेमाल करने के फ़न में माहिर था। वह उससे कहीं ज़्यादा चालाक था कि ताक़त को इक़्तेदार की मज़बूती का अकेला रास्ता समझता। बल्कि हिक्मते अमली, सियासत और नये सियासी तर्ज़े अमल अपनाने की तरफ़ भी उसका रुख़ था। इसी तरीक़े से उसने अशराफ़े अरब और अब्बासियों की मुख़ालेफ़त और अमीन का छोटा भाई होने के बावजूद, अमीन को मैदान से निकाल बाहर किया और ख़ुद ख़िलाफ़त पर क़ब्ज़ा कर लिया। दूसरी बात ये थी कि मामून दूसरे उमवी और अब्बासी ख़लीफ़ाओं के मुक़ाबले में निस्बतन इल्मी फ़िक्र और सक़ाफ़ती ज़ौक़ रखता था और अपना ज़ाहिर ऐसे बनाये रखता था जैसे वह दोस्तदारे इल्म व फ़ज़ीलत और हक़ व इन्साफ़ का तरफ़दार है। फ़ख़्री इस बारे में लिखते हैं: ''मामून दूसरे अब्बासी ख़लीफ़ाओं से ज़्यादा चालाक था।'' सुयूती कहते हैं: ''मामून की चालाकी, इल्म और सियासत ये वह अहम बातें थीं जो हुकूमत में उसकी क़ुव्वत और फ़रेब की आमेज़िश का सबब बनीं।

मामून का मक़सद

''क़ुदरत'' को ''इक़्तेदार'' में बदलना और ''हाकिमियत'' को शरअ बनाना

मामून जो दूसरे ख़लीफ़ाओं के मुक़ाबले में ज़्यादा चालाक था ये नुकता समझ चुका था कि ''क़ुदरत'' और ''इक़्तेदार'' और ''शरई हुकूमत'' और ''ग़ैरशरई हुकूमत'' में क्या फ़र्क़ है और वह ये भी जानता था कि अगर ''हुकूमत'' अवाम की नज़रों में ''शरीअत'' से महरूम हो तो हमेशा ख़तरों में घिरी रहती है।

अब्बासियों ने उमवियों से जंग के दौरान अपनी तहरीक की मशरूइयत को पैग़म्बर[स०] व आले पैग़म्बर[अ०] से इन्तेसाब के ज़रिये हासिल किया था और हुसैन[अ०] के ख़ून का बदला लेने के नाम पर अपनी उमवी मुख़ालिफ़ तहरीक को हक़दार यानी आले मुहम्मद[अ०] के हवाले कर देंगे, मगर उमवी हुकूमत के ज़वाल के बाद हुकूमत की बागडोर ख़ुद ही संभाल ली और पिछले नारे भूल गये। इसी वजह से इराक़, ख़ुरासान और ईरान के अवाम की निगाहों में जो आले मुहम्मद[अ०] और अइम्म-ए-अहलेबैत की तरफ़ झुकाव रखते थे, उनको क़ानूनी हैसियत हासिल न थी और उमवियों की तरह शुमार किये जाने लगे।

मामून की ग़ालिबन ये चाहत थी कि इमाम रिज़ा[अ०] की वलीअहदी का जाल फैलाकर ''क़ुदरत'' को

''इक़्तेदार'' में तबदील करे और ''हाकिमियत'' को अवाम की नज़र में ''जायज़'' बना दे। वह इमाम रिज़ा[अ०] को अपने समाजी और सियासी निज़ाम की तौजीह का ज़रिया बनाना चाहता था। लेकिन इमामत ने अपने नपे तुले और इलाही अमल और हिक्मत के ज़रिये इस मन्सूबे पर पानी फेर दिया और वली अहदी को तौजीह निज़ाम का वसीला बनने के बजाए उसी निज़ाम को कुचल डालने के असलहे में बदल दिया।

दूसरा मक़सद
अवाम की नज़रों में हुकूमत की साख को बदलना

मामून अपने इस इक़्दाम के ज़रिये ख़िलाफ़ती निज़ाम की साख को अवाम की नज़र में बदलना चाहता था। उमवियों के ज़माने से ख़ास कर यज़ीद के ज़माने से हुकूमत में एक अजीब हैवानियत और दरिन्दगी की कैफ़ियत पैदा हो गयी थी। अब्बासियों के हुकूमत में आने के बाद सफ़्फ़ाह, मन्सूर और हारून की ख़ूनी जंग और दरिन्दगी इस हालत के बाक़ी रहने की वजह हुई, इस पर अमीन व मामून की आपसी जंग इस साख को बदलने में कोई मदद न की।

मामून चूँकि चालाकी के लेहाज़ से सभी पिछले ख़लीफ़ाओं से अलग था इसलिए वह चाहता था कि हुकूमत के बारे में इस आम असर को बदल दे। इसी मक़सद को पूरा करने के लिए एक तरफ़ तो उसने खुद को इल्म दोस्त ज़ाहिर करने की कोशिश की और दूसरी तरफ़ ख़ुद को हक़ व फ़ज़ीलत का तरफ़दार साबित करना चाहा। चुनानचे अपने पहले मक़सद को पूरा करने के लिए उसने पिछले इल्मी माख़ज़ की इशाअत और हकीमों और फ़लसफ़ियों की किताबों के तर्जुमों, इल्मी मुनाज़रों और फ़लसफ़ियाना मजलिसों का सिलसिला शुरु किया। और दूसरे मक़सद की तकमील के लिए अहलेबैत की फ़ज़ीलतों का इक़रार करना ख़ासकर अमीरुलमोमिनीन[अ०] के मरतबे का एतेराफ़, सादात का एहतेराम और इमाम रिज़ा की जानशीनी का एलान किया ताकि उसे हक़ पसन्द समझा जाने लगे। ये दोनो तरीक़े मामून की एक ही पॉलीसी के दो पहलू हैं जिनका मक़सद हुकूमत के लिए अवामी जवाज़ पैदा करना और हुकूमती निज़ाम की साख को बदलना था।

तीसरा मक़सद
उभरती हुई शिया तहरीक को दबाना

उस दौर में शीईयत एक अवामी इन्क़ेलाबी क़ुव्वत की सूरत में उभर आयी थी और शिया, निज़ामे हाकिम के ख़िलाफ़ हिज़्बे मुख़ालिफ़ की शक्ल में उभर रहे थे। दुनिया इस्लाम के गोशे-गोशे में ख़ासकर ख़ुरासान में इन्क़ेलाब का ज्वालामुखी तैयार था और लावा फूटने ही वाला था। मामून इमाम रिज़ा की जानशीनी के एलान से ज्वालामुखी को ठण्डा करना और तहरीक में फूट डालना चाहता था और तहरीक की राह में रुकावट पैदा करना चाहता था। मगर इमाम रिज़ा[अ०] की हिकमत अमली ने तहरीक को और ज़्यादा फैला दिया।

शिया अरबी लेखक हाशिम मारूफ इस नुक्ते की तरफ ग़ौर करते हुए लिखता है किः ''जब मामून ने देखा कि शिया फैलते चले जा रहे हैं, यहाँ तक कि उसके अरकाने दौलत में भी शिया अइम्मा और शीईयत की तरफ झुकाव पाया जाने लगा है, तो उसने इसे रोकना चाहा। चुनानचे इमाम रिज़ा[अ०] की जानशीनी का एलान शिया तहरीक को फैलने से रोकने की एक चाल थी। एक तरफ वह तहरीक की आग के ठण्डा होने का इन्तिज़ार कर रहा था, दूसरी तरफ़ इन्क़ेलाबियों के रहबर को राजधानी में अपने आदमियों की निगरानी में रखना चाहता था।

132 हि० से यानी जब से अब्बासी इक़्तेदार में आये शीआी इन्क़ेलाबात का एक सिलसिला सा क़ायम हो गया यहाँ तक कि कुछ वज़ीर भी शीआी ख़ायालात रखते थे और ख़िलाफ़त को बनी फ़ातिमा की तरफ़ मुन्तक़िल कर देना चाहते थे (अबी सलमा इनहेलाल ने अबी अब्बास सफ़्फ़ाह के दौर में और याक़ूब बिन दाऊद ने अल-महदी के दौर में ऐसी ही कोशिश की) अमीन और मामून के दौर में भी बड़ी-बड़ी शिया तहरीकें सामने आयीं। मुहम्मद बिन इब्राहीम और अबिस्सराया के

इन्क़ेलाबात या मुहम्मद दीबाज बिन इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] का क़याम ऐसा ही है। असल में शिया तहरीकें और इन्क़ेलाबात मामून की हुकूमत के इब्तेदाई दिनों में अपनी उठान पर पहुँच चुके थे। उस दौर में हर दौर से ज़्यादा शियों की कोशिशें बड़े इन्क़ेलाब की शक्ल इख़्तियार कर गयी थीं। यहाँ तक कि कहा जाता है कि मामून की लश्कर का कमाण्डर ताहिर बिन हसन ख़ुद शीई ख़यालों वाला था।

इमाम रिज़ा[अ०] की जानशीनी से मामून ये चाहता था कि इस बहाने से शियों को जिन्होंने एक मुख़ालिफ़ टुक्ड़ी की शक्ल में जंग का नक़्शा बना रखा है उनको मोर्चों से बाहर खींच कर जंग का ख़ात्मा कर दे। वह चाहता था कि इमाम[अ०] के इन्क़ेलाबी मक़ाम व मन्ज़िलत पर गहरी चोट लगाये और शियों की इमकानी (Potential) इन्क़ेलाबी ताक़त को दबा दे। इस ज़माने तक शिया हमेशा एक मुख़ालिफ़ कुव्वत और महाज़ी उन्सुर समझे जाते थे जो पहाड़ों और गुफ़ाओं में मोर्चाबन्दी करते थे। मामून इमाम रिज़ा[अ०] को जानशीनी क़ुबूल करने पर इस लिए मजबूर कर रहा था, वह चाहता था कि इस मौक़े से फ़ायदा उठाते हुए शिया मुबारज़ा पर एक चोट लगाये जिसने हुकूमत से पल भर का चैन भी छीन लिया था। मगर इमाम रिज़ा[अ०] ने अपनी रहबरी की ख़ुदादाद इस्तेदाद की बुनियाद पर उसके मन्सूबे को नाकाम बना दिया और इस मौक़े से फ़ायदा उठाकर तहरीक को और फैला दिया यहाँ तक कि मामून इमाम[अ०] को शहीद कर देने पर मजबूर हो गया।

चौथा मक़सद

इमाम की शख़्सियत को कमज़ोर करना

हुकूमत का मक़सद इमाम की इन्क़ेलाबी शख़्सियत पर चोट लगाना था। इमाम[अ०] की शख़्सियत को कमज़ोर करने के लिए मामून ने दूसरे तरीक़े भी आज़माये जैसे इल्मे कलाम के माहिरों के साथ इमाम[अ०] के मुनाज़रे कराना ताकि इमाम हार जायें और उनकी इल्मी बुलन्दी ख़त्म हो जाए, लेकिन हर मुनाज़रे में इमाम की शख़्सियत और ज़्यादा आबोताब के साथ सामने आयी।

पाँचवां मक़सद

दाख़िली दुश्मनों के ख़िलाफ़ इक़्तेदार की जंग में शिया ताक़त का इस्तेमाल

ये बात साफ़ ज़ाहिर होती है कि इमाम रिज़ा की जानशीनी के एलान से मामून एक तीर से दो शिकार करना चाहता था। एक तरफ़ शियों के इन्क़ेलाबी रुजहानात को क़ाबू में रखना और दूसरी तरफ़ उस अज़ीम कुव्वत को अपने फ़ायदे में इस्तेमाल करना। अभी तक मामून के इक़्तेदार की जड़ें मज़बूत नहीं हुईं थीं और अरब अमाएदीन मामून के मुक़ाबले में अमीन के तरफ़दार थे और मामून इक़्तेदार के मरकज़ को अरब अमाएदीन की तरफ़ से अहले ख़ुरासान की तरफ़ मुन्तक़िल कर देने की कोशिश में था। अहलेबैत से ज़ाहिरी रिफ़ाक़त सिर्फ़ इस ख़याल से थी कि शायद इस तरह अहले ईरान उसके हामी हो जाएं। इमाम रिज़ा की जानशीनी के एलान से इन्क़ेलाबी शियों की अज़ीम कुव्वत को वह अपने मफ़ाद में इस्तेमाल करना चाहता था। और अहले ख़ुरासान की हिमायत भी हासिल करना चाहता था जो ज़्यादातर शीई रुजहानात रखते थे और जिनकी मदद से अपने दाख़िली दुश्मनों को शिकस्त दी थी। अरब के अवाम चूँकि अमीन के तरफ़दार थे इसलिए उसके पास इसके अलावा कोई चारा न था कि वह फ़ारस और ख़ुरासान के अवाम पर भरोसा करे।

छठा मक़सद

ख़ुरासान के अवाम की ख़ुशनूदी हासिल करना

मामून का एक और मक़सद इमाम रिज़ा की जानशीनी के एलान से ख़ुरासान वालों की ख़ुशनूदी हासिल करना था, यहाँ तक कि अमीन की शिकस्त के बाद भी वह अपने इक़्तेदार की हिफ़ाज़त के सिलसिले में ख़ुरासान वालों ही पर भरोसा करता था। उसकी माँ जिसका नाम मराजिल था ख़ुद भी ख़ुरासान ही की रहने वाली थी। अमीन और मामून की जंग हक़ीक़त में अरब और फ़ारस व ख़ुरासान वालों की जंग थी। मामून का वज़ीर फ़ज़ल बिन सहल ईरानी था और अमीन का

वज़ीर फ़ज़ल बिन रबी अरब था। इक़्तेदार बचाने के लिए मजबूरन मामून ज़्यादा तर ईरानियों और खुरासानियों पर भरोसा करता था। चूँकि अक्सर खुरासानी शीआी रुजहानात रखते थे, इस वजह से उनकी हिमायत हासिल करने के लिए मामून मजबूरन खुद को अहलेबैत का दोस्त ज़ाहिर करता था।

इमाम रिज़ा की शहादत

मामून के तरीक़-ए-कार की शिकस्त का मुज़ाहेरा

इमाम रिज़ा की जानशीनी के सिलसिले में मामून के इक़दाम, अब्बासी नमक ख़्वार मोर्रिख़ीन के नज़रिये के ख़िलाफ़, मुख़लिसाना न थे बल्कि ये इक़दाम क़तई सियासी और दिखावे के थे, मगर इमाम ने खुदादाद हिक्मते अमली के ज़रिये मामून के नक़शे को पानी पर लकीर बनाने जैसा बना दिया।

इमाम ने मुख़तलिफ़ तरीक़े और इज़हारे कराहत के ज़रिये मामून को उसके मक़सद में कामयाब न होने दिया बल्कि जानशीनी के एलान से फ़ायदा उठाते हुए इस्लाम के सच्चे पैग़ाम, शीईयत की तबलीग़, हुकूमत और मौजूदा निज़ाम को मज़मूम साबित करने का काम किया। इमाम के इसी अज़ीम कारनामे ने मामून और हुकूमत को इस दर्जा ख़ौफ़ज़दा कर दिया कि आख़िरकार घबराहट के आलम में मामून ने उन्हें ज़हर दिलवाकर शहीद करवा दिया।

इमाम रिज़ा की शहादत इस बात की दलील है कि उनकी हिक्मत अमली के मुक़ाबले में मामून की चाल मात खा गयी। ख़लीफ़ा ने इमाम को ज़हर देकर अपनी कमज़ोरी और बेचारगी का एतेराफ़ किया है।

इमाम रिज़ा[अ०] की हिकमते अमली

मामून और उसकी ख़िलाफ़त के काम करने के तरीक़े के मुक़ाबले में इमाम की हिकमते अमली क्या थी? इमाम रिज़ा की हिकमते अमली बिल्कुल नयी, बेहद हस्सास और बहुत ज़्यादा क़ाबिले ग़ौर है क्योंकि इससे पहले शिया अइम्मा मुबारज़ा को बढ़ाने की ग़र्ज़ से हमेशा राजधानी से दूर रहते थे मगर इमाम रिज़ा ने मजबूरन वली अहदी क़ुबूल की और राजधानी में रहकर मुबारज़ा को आगे बढ़ाया।

इमाम रिज़ा की हिकमते अमली बेहद हस्सास है क्योंकि इन्क़ेलाबी साख को बरक़रार रखने के लिए राजधानी से दूर रहना वली अहदी क़ुबूल कर लेने से ज़्यादा आसान था, लेकिन इमाम रिज़ा ने तहरीक को आगे बढ़ाने के लिए वली अहदी ज़रिये और वसीले के तौर पर इस्तेमाल किया।

ये हिकमते अमली बेहद क़ाबिले तवज्जह है क्योंकि हक़ और बातिल की कशमकश में मुख़तलिफ़ तरीक़ेकार इस्तेमाल हुआ करते हैं। कभी इमामे हसन[अ०] की तरह सुलह जोई से काम लिया गया, कभी इमाम हुसैन[अ०] की तरह नबर्द आज़मायी की गयी, कभी हज़रत ज़ैनब[अ०] की तरह ख़िताबत से काम लिया गया, कभी सै० सज्जाद[अ०] की तरह दुआओं को बतौर हाथियार इस्तेमाल किया गया, इमाम मुहम्मद बाक़िर और इमाम जाफ़र सादिक़ की तरह मआरिफ़ व नज़रियाते इस्लाम को मुन्तशिर किया गया कभी इमाम मूसा काज़िम[अ०] की तरह सऊबते क़ैद बर्दाश्त की गयी और कभी मसनदे वली अहदी ख़िलाफ़त पर जलवा फ़रमाकर तहरीक के सच्चे रहबरों की मदद की गयी।

इमाम रिज़ा[अ०] की हिकमते अमली इस वजह से भी बेहद क़ाबिले ग़ौर है कि इससे हमें ये मालूम होता है कि एक खुदायी रहबर किस तरह बदतरीन हालात में अपनी ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ जबरिया वली अहदी क़ुबूल करके बवुजूहे अहसन इस वली अहदी से तहरीक के लिए फ़ायदा हासिल करता है।

इमाम रिज़ा[अ०] ने इस क़िस्म की हिकमते अमली का इन्तेख़ाब क्यों किया? उसे जानने के लिए हमें चाहिये कि हम इस ज़माने के इस्लामी समाज पर नज़र डालें पैग़म्बरे इस्लाम[स०] के बाद ''मेयार'', ''मिक़दार'' पर क़ुर्बान हो चुका था। इस्लाम तेज़ी के साथ ऐशिया, अफ़्रीक़ा और यूरोप में फैला था। लाखों लाख अफ़राद मुसलमान हो गये थे मगर उनमें ज़्यादती ऐसे लोगों की थी जो नाम के लिए तो मुसलमान ज़रूर हो गये थे मगर रसमन वह दौरे जाहिलियत के अक़ाएद और तहज़ीब के पाबन्द थे। अगर किसी हद तक इस्लाम से आशना भी

थे तो ये वह इस्लाम था जो उन्हें दरबारे ख़िलाफ़त से मिला था। हेजाज़, कूफ़ा, बसरा और यमन के लोग किसी हद तक इस्लाम से वाक़फ़ियत रखते थे। इसी वजह से शीआी तहरीकों की शुरुआत इन ही इलाक़ों से हुई थी। मगर तुर्किस्तान, मावराउन्नहर, रूम, अफ़्रीक़ा, यूरोप (उन्दुलुस) और सिंध वग़ैरा के अवाम इस्लाम की सही तालीम, अइम्मा की मन्ज़िलत और शीआी तहरीक से तक़रीबन अन्जान थे। यही वजह है कि अक्सर अब्बासी ख़लफ़ाओं ने शिया तहरीक को तातारियों, तुर्कों और रोमियों की मदद से कुचला है।

निस्बतन मुन्सिफ़ और मोमिन दानिश्मन्द जो दुनियाए इस्लाम के मरकज़ी ख़ित्ते (हिजाज़, बग़दाद, दमिश्क़) के रहने वाले थे हुकूमत के मुख़ालिफ़ थे, और अइम्म-ए-अहलेबैत की तरफ़ रुजहान रखते थे (यहाँ तक कि अइम्मा-ए-अहलेसुन्नत यानी अबूहनीफ़ा, शाफ़ई और मालिक ने भी हुकूमत के कारिन्दों के हाथों दुर्रे खाये और क़ैद की सख़्तियाँ झेलीं) और हुकूमत ने कुछ दरबारी उलमा पाल रखेथे जिनका काम मौजूदा निज़ामे हुकूमत की तौज़ीह पेश करना था। जो इस्लाम तुर्किस्तान और तफ़्क़ाज़ के लोगों तक पहुँचा था वह फेलतोरियों के ज़रिये पहुँचा था।

वाक़िफ़कार उलमा और अवाम तो अइम्मा को रूहानी और हक़ीक़ी पेश्वा की हैसियत से और हुकूमत को ग़ैर शरई समझते थे लेकिन नावाक़िफ़ और दूर दराज़ इलाक़ों में बसने वाले लोग हुकूमत की क़दग़न और ग़लत प्रोपेगण्डों की वजह से अइम्मा की पहचान नहीं रखते थे। सिर्फ़ हेजाज़, मदीना और कुछ इराक़ व ईरान के महदूद इलाकों में पैग़म्बर और अहलेबैत की याद दिलों में बाक़ी रह गयी थी। उलमा के दरमियान इमाम मुहम्मद बाक़िर^अ० और इमाम सादिक़^अ० का ज़िक्र नुमायाँ तौर पर होता था। बक़िया अवाम यानी बल्ख़ से लेकर उन्दुलुस तक के रहने वाले हुकूमत की अफ़वाहों और रेशा दवानियों की वजह से इस हक़ीक़त से अन्जान थे कि रसूल^स० के घराने पर क्या गुज़र रही है। ख़ास कर इमाम मूसा काज़िम^अ० के ज़माने में जो ख़लीफ़ा की क़ैद में थे, रसूल^स० के घराने और अवाम के दरमियान राब्ता बहुत दुश्वार हो गया था।

इन ही हालात में इमाम रिज़ा^अ० ने इमामत की ज़िम्मेदारियाँ संभालीं और मामून ने उन्हें वली अहदी की पेशकश की और उन्हें उसे क़ुबूल करने पर मजबूर किया। ऐसी हालत में अगर हुकूमत के जब्रो तशद्दुद की बावजूद इमाम ये इरादा कर लेते कि वह इस पेशकश को ठुकरा देंगे तो ज़्यादा से ज़्यादा वह शहीद हो जाते जो अली^अ० और हुसैन^अ० के वारिसों के लिए फ़ख़्र की बात थी इसके अलावा और कुछ न होता, ताहम न चाहते हुए इस पेशकश को मन्जूर कर दिया ताकि इसी ज़रिये से इमामों के नाम और शीआीयत का पैग़ाम आलमे इस्लाम के गोशे-गोशे में पहुँचा दें। इमाम चाहते थे कि हुकूमत की ज़रूरत को "बुर्जे फ़रियाद" के तौर पर तशैय्युअ् की नक़ाबत का ज़रिया बना लें और उसी मक़ाम से शीआीयत की आवाज़ दुनिया के कानों तक पहुँचा दें।

इमाम हुसैन^अ० ने अपने ख़ून, हज़रत ज़ैनब ने अपनी ख़िताबत और सै० सज्जाद ने अपनी दुआओं से शीआी तहरीक को इस हद तक मुहकम बना दिया था कि अब इसके वजूद के लिए कोई ख़तरा न था और इमाम मुहम्मद बाक़िर^अ० और इमाम जाफ़र सादिक़^अ० ने शीआी मआरिफ को मकतब की शक्ल में मुदव्वन कर दिया था। इस वजह से वली अहदी की पेशकश को क़ुबूल कर लेने से शीआी मसलक की ग़लत तफ़सीर का कोई एहतेमाल बाक़ी न रहा चुनानचे इमाम रिज़ा ने अपनी इस अमल के ज़रिये इस तहरीक को फैलाने की कोशिशें शुरु कर दीं।

इमाम रिज़ा^अ० की वली अहदी की बुनियाद पर पहली बार इस्लामी दुनिया की तमाम मस्जिदों में एक ख़ुदाई रहबर और इमाम अहलेबैत का पैग़ाम खुतबे में शामिल हुआ और पहली बार दुनियाए इस्लाम के रहने वालों को इस हक़ीक़त का इल्म हुआ कि पैग़म्बर के ख़ानदान की मुमताज़ हस्तियाँ अभी मौजूद हैं और इस दर्जा फ़ज़ीलत की मालिक हैं कि ख़लीफ़ तक उन्हें आलमे इस्लाम की रहबरी के लिए लायक़ तरीन फ़र्द मान लेने पर मजबूर हैं। इमाम रिज़ा ने शीआीयत को

हुकूमत के मुक़ाबले में एक अज़ीम सियासी क़ुव्वत की शक्ल बख़्शी। इमाम रिज़ा के लिए वली अहदी दुनिया के कानों तक उनका पैग़ाम और हक़ की आवाज़ पहुँचाने का ज़रिया थी।

मामून ने ख़ुद को इमाम का तरफ़दार ज़ाहिर करने के लिए अहकामात जारी कर दिये कि तमाम इस्लामी दुनिया की मस्जिदों में जुमा के ख़ुतबे में इमाम का नाम शामिल किया जाए। यही नहीं बल्कि उसने हुकूमत का क़ौमी रंग सियाह के बजाए सब्ज़ क़रार दे दिया, क्योंकि सियाह रंग बनी अब्बास का क़ौमी निशान था और सब्ज़ रंग बनी फ़ातिमा का।

इस तरह इमाम के नाम और शीआी तहरीक के पैग़ाम की तौसी हुई। जिस हथियार को मामून ने इमाम के ख़िलाफ़ और शीआी तहरीक को बेकार करने के लिए इस्तेमाल करना चाहा था, इमाम ने इसी हथियार को ख़िलाफ़त और हुकूमत के ख़िलाफ़ इस्तेमाल किया और मजबूरी की वजह से जो हालात पैदा हो गये थे इन ही हालात से इमाम ने शीआी तहरीक के मफ़ाद में इस्तेमाल किया।

इमाम रिज़ा[अ०] की अक़लमन्दी अमली ये थी कि एक तरफ़ तो वली अहदी क़ुबूल करके ये ज़ाहिर कर दिया कि ख़िलाफ़त को वह अपना हक़ समझते हैं, और दूसरी तरफ़ बार-बार मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से इस बात को ज़ाहिर किया कि मामून और उसकी हुकूमत के मुख़ालिफ़ हैं और वह वली अहदी को मजबूरन क़ुबूल कर रहे हैं। इमाम रिज़ा इसी तरह के हालात से गुज़र रहे थे जिनसे तीसरे ख़लीफ़ा के क़त्ल के बाद हज़रत अली[अ०] गुज़रे थे। हज़रत अली[अ०] ने भी ख़िलाफ़त क़ुबूल कर ली थी ताकि कोई ये न कह सके कि अगर अली[अ०] ख़िलाफ़त को अपना हक़ समझते थे तो उन्होंने ख़िलाफ़ ने क़ुबूल क्यों न की? मगर साथ ही साथ ये भी ज़ाहिर कर दिया कि वह मजबूरन ख़िलाफ़त क़ुबूल कर रहे हैं।

इमाम रिज़ा[अ०] जानते थे कि उनका वली अहद बनना मामून की उम्मीदों के ख़िलाफ़ साबित होगा और उनकी वली अहदी से शीआी तहरीक ख़त्म नहीं होगी क्योंकि शिया वह मोमिन हैं जो इमाम की इस्मत का अक़ीदा रखते हैं और जानते हैं कि इमाम कभी हुकूमत के आल-ए-कार नहीं बनेंगे और वली अहदी को क़ुबूल करने का मक़सद, ख़िलाफ़त के निज़ाम को बातिल क़रार देना है। इमाम रिज़ा[अ०] अच्छी तरह समझ रहे थे कि वह मामून को यहाँ तक हरासाँ कर देंगे कि वह उन्हें शहीद करा दे। इस तरह वली अहदी का क़ुबूल करना हुकूमत और शियों के दरमियान झगड़ा बढ़ाने का सबब हो जायेगा, न कि कम करने का।

इमाम रिज़ा[अ०] ने अपनी हिकमते अमली से मामून की हिकमते अमली को शिकस्त दे दी और वली अहदी को एक ऐसा मिंबर बनाया जहाँ से वह शीआी एहतेजाज को आलमे इस्लाम के गोशे-गोशे तक पहुँचा सकें।

हम इमाम रिज़ा की ग़ैर मामूली हिकमते अमली की कामयाबी को इस रद्दे अमल से समझ सकते हैं कि उनके बाद ममलकते इस्लामी के तूल व अर्ज़ में मुख़्तलिफ़ शिया इन्क़ेलाबी तहरीकें सर उभारने लगीं और हुकूमत इस क़दर हरासाँ हो गयी कि बाद के अइम्मा को हमेशा या तो क़ैद में रखा गया या कड़ी निगरानी में और मुतवक्किल जैसे लोगों ने दजला व फ़ुरात को बेशुमार शियों के ख़ून से रंगीन कर दिया।

जिस तरह इमाम हसन[अ०] की अक़्लमन्दी ने मुनाफ़ेक़त के मकरूह चेहरे से इस्लाम की नक़ली नक़ाब नोच कर फेंक दिया था और मुआविया को मजबूर कर दिया था कि वह यज़ीद की सूरत में अपनी असलियत ज़ाहिर कर दे। इसी तरह इमाम रिज़ा[अ०] ने भी मुनाफ़िक़ हुकूमत के चेहरे से इस्लाम दोस्ती का नक़ाब नोच फेंका था और मामून को मुतवक्किल के रूप में अपना असली चेहरा दिखाने पर मजबूर कर दिया था क्योंकि हक़ और हक़ परस्तों के लिये ''मुआविया'' और ''मामून'' का मरहला हमेशा ''यज़ीद'' और ''मुतवक्किल'' के मरहले से कम ख़तरनाक नहीं होता है।



मुहाफ़िज़े दीन के मन्सब की अहमियत और उसकी ज़रूरत

हुज्जतुल इस्लाम वलमुस्लिमीन मौलाना सै० हसन नक़वी साहब

दुनिया के मनसबों में किसी निज़ाम के मुहाफ़िज़ की ज़िम्मादारिया जब शदीद होती हैं और उसकी कोई ग़लती ऐसे नुक़सान का कारण बन जाती है जिसकी भरपाई न हो सके तो वह क़ानून बनाने वाला जो हमेशा के लिए दीनी और दुनियावी ज़िन्दगी के हर-हर शोबे का ज़िम्मेदार हो उसके यहाँ किसी ग़लती के क्या नतीजे हो सकते हैं? और ये एक फ़ितरी ज़रूरत है कि जितने बड़े नुक़सान का इन्सान को ख़तरा हो उसी एतेबार से उस नुक़सान से बचने का एहतेमाम होना चाहिए। कुछ नुक़सान ऐसे मामूली होते हैं जिनको इन्सान बर्दाश्त कर लेता है, कुछ नुक़सान ऐसे होते हैं जो ज़िन्दगी के किसी एक हिस्से के लिए नुक़सान पहुँचाने वाले होते हैं जिनको मजबूरन इन्सान क़ुबूल कर लेता है। कुछ नुक़सान दुनियावी ज़िन्दगी को तबाह कर देते हैं और कुछ ख़तरे रूहानी ज़िन्दगी के लिए होते हैं कुछ डर वक़्ती होते हैं और कुछ हमेशा के। तो जितने बड़े नुक़सान का इन्सान को ख़तरा होता है उसी हिसाब से बड़े पैमाने पर उस ख़तरे से बचने के लिए रास्ते निकाले जाते हैं। वक़्ती नुक़सान से हिफ़ाज़त हमेशा वाले नुक़सान की बनिस्बत कम की जाती है मामूली नुक़सान से हिफ़ाज़त बड़े नुक़सान की बनिस्बत कम की जाती है। तो जब ये क़ायदा है और इन्सानी फ़ितरत की चाहत है, तो अगर माद्दी और वक़्ती बनाने वाले और क़ानून की हिफ़ाज़त करने वाले के लिए इतनी एहतियात बरती जाती हैं कि कहीं ग़लती न हो जाए। तो उस क़ानून के मुहाफ़िज़ और मुबल्लिग़ को जो कि इन्सानी ज़िन्दगी के हर हिस्से से चाहे वह माद्दी हो या रूहानी, हमेशा का हो या वक़्ती सबसे जुड़ा है, तो भला क़ानून बनाने वाले को ग़लती करने वाला क्यों ख़याल किया जा सकता है? और ऐसे क़ानून को किसी ग़लतकार के हवाले कर दिया गया तो हर मामूली से मामूली ग़लती पर पूरी इन्सानियत का सरमाया पानी में चला जायेगा। ऐसे क़ानून बनाने वाले के लिए सिर्फ़ ग़लती न करना ही काफ़ी नहीं है। बल्कि मुमकिन ग़लती और ग़लती का एहतेमाल भी न होना चाहिए।

अब अगर ये कहा जाए कि मुक़न्निन और मुहाफ़िज़े क़ानून को सिर्फ़ ऐसा होना चाहिए जो जानबूझकर ग़लती न करता हो, यानी पूरी ज़िम्मेदारी के साथ अपने उसूलों पर अमल करता है और दूसरों को तबलीग़ करता हो तो ऐसे मुबल्लिग़ से तबलीग़ की ग़रज़ पूरी हो सकती है इसकी कोई ज़रूरत नहीं कि इमकान और ख़ता और ग़लती का एहतेमाल भी न हो। क़ानून लागू करने के लिए अक़्वाल की अहमियत है। बस इस शख़सियत वाला क़ानून होना काफ़ी है जो इमकान भर उसूल वाला और ग़लतियों से पाक हो, ग़लतियों पर अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात की वजह से अमल न करे जब ऐसा रहबर और मुबल्लिग़ होगा तो वह अपने फ़राएज़ को पूरा करने पर क़ादिर होगा और ऐसे क़ानून बनाने वाले का मिशन बहुत ही कामयाब होगा। दुनिया का कोई अक़्लमन्द इस हद से आगे बढ़ने को ज़रूरी नहीं ख़याल करता सिर्फ़ ऐसे ही पाकीज़ा इन्सानों पर बस करके मुल्कों की बागडोर उनके हाथों में दे दी जाती है और हुस्नो ख़ूबी के साथ मुल्क का निज़ाम चलता रहता है इसकी कोई ज़रूरत नहीं कि ग़लती करने वाले लोगों से आगे बढ़कर ऐसे लोग तलाश किये जायें जिनसे इम्कानी ग़लती भी न हो। लेकिन अगर ग़ौर किया जाए तो बुनियादी एतेबार से सिर्फ़ इसी हद पर भरोसा कर लेना मिशन को कामयाब नहीं बना सकता ये सही है कि दुनियावी बादशाहों के यहाँ अगर बहुत ज़्यादा एहतियात की गयी तो ऐसे को बादशाह बनाया गया जो आमतौर से ग़लतियाँ न करते हों लेकिन वह बादशाहत दुनियावी थी और उनके असरात सिर्फ़ माद्दी और वक़्ती थे ऐसे बादशाहों की ग़लतियाँ वक़्ती तौर पर हलाकत की वजह हो सकती हैं जिसमानी एतेबार से हलाक करने वाली हो सकती हैं उनको लिबासे दवाम नहीं पहनाया जा सकता उनको रूहानी तक़ाज़ों से नहीं जोड़ा जा सकता इसलिए चूँकि ख़ुसरवाने दुनिया की ग़लतियाँ सिर्फ़ जिस्म के नुक़सान और वक़्ती नुक़सान ही की हदों में रहती हैं, इसलिए उनके लिए वह हद ''कि आम तौर पर ग़लती न करते हों'' काफ़ी हो जाएगी लेकिन जिस की हमेशा की ज़िम्मेदारी, घिरे हुए ज़माने और जगह से आज़ाद हो, जिस्म और रूह की बेड़ियों से अलग हो और मुल्क और क़ौम की हद बन्दियों से महदूद न हो उसके यहाँ

ग़लती का इमकान भी नहीं होना चाहिए क्योंकि अगर ग़लती का इमकान होगा तो ग़लती ज़रूर करेगा और अगर न भी करे तब भी उसके अक़वाल और आमाल इस ज़िम्मेदारी के साथ पैरवी और इताअत के लायक़ नहीं बन सकते जिस तरह ख़ता न करने वालों के काम और बातें पैरवी और इताअत के लायक़ हो सकती हैं क्योंकि हर लम्हा हर सुनने वाले को ये गुमान रहेगा कि मुमकिन है इस वक़्त ये क़ानून बनाने वाला जो कर रहा है अपनी ख़्वाहिशों की वजह से क़ानून के ख़िलाफ़ कर रहा है और हम अमल करें तो हमेशा की हलाकत में फंस जाएं इसलिए एक तो निज़ाम को पूरी तरह ज़हनों में जगह नहीं मिल सकेगी और दूसरे जब ग़लती हो जायेगी तो न मिटायी जाने वाली ग़लती होगी जिससे हमेशा की हलाकत और हमेशा की फ़ना में इन्सान फंस जायेगा।

दुनियावी बादशाहों के फ़राएज़ ज़ाहिरी और माद्दी इन्तिज़ाम से मुताल्लिक़ होते हैं जिन पर अगर एक तहज़ीबी दिमाग़ ग़ौर करे तो सही और ग़लत में फ़र्क़ कर सकता है इसलिए इसके लिए सिर्फ़ वह काफ़ी समझी जा सकती है लेकिन जहाँ ज़ाहिरी हालात के सुधार के साथ-साथ इस ग़ैबी और आख़िरत वाली ज़िन्दगी से भी सुधार मुताल्लिक़ हो जहाँ तक आली दिफ़ाअ से माली दिफ़ाअ तक इन्सान बिना किसी ग़ैबी सहारे के नहीं पहुँच सकता, उसके हालात उसी ग़ायब ज़िन्दगी के कैफ़ियात उस ज़िन्दगी के लिए तोशा, और इसी तरह की अकसर चीज़ें जिनको ज़ाहिरी दिफ़ाअ नहीं ख़याल कर सकते। ऐसे ग़ायब हालात का भी सुधार जिसके हवाले हो उसको ऐसा ही होना चाहिए जिससे इमकानी ग़लती न हो। क्योंकि मुबल्लिग़े क़ानून, मज़हब से मुताल्लिक़ जो फ़राएज़ तालीम हैं उनमें से अकसर ऐसे हैं जिनको इन्सान की माद्दी निगाहें न तो देख सकती हैं और न जिनमें सेहत व अदम को इम्तियाज़ सतही दिफ़ाअ कर सकते हैं। इसलिए अगर ऐसे उसूलों का मुहाफ़िज़ ग़लती करने वाला होगा तो यक़ीनन उसकी हर ग़लती ऐसे बड़ी बर्बादी के ग़ार में पूरी इन्सानियत को ढकेल देगी जिसके बाद सिवाए हमेशा बाक़ी रहने वाली हलाकत के कोई रास्ता न हो, मालूम हुआ कि मज़हबी क़ानून के मुहाफ़िज़ को बेदाग़ किरदार का मालिक होना चाहिए और अपनी ज़िन्दगी के हर-हर लम्हे में गुनाहों से पाक होना चाहिए, या दूसरे लफ़्ज़ों में यूँ कहा जा सकता है कि अव्वल से आख़िर तक मासूम होना चाहिए, यही वजह है कि ख़ालिक़े कायनात ने क़ानूने शरीअत जिन हाथों में दिया है वह ऐसे थे जिनसे ख़ुदा की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कोई काम नहीं हो सकता था उसने अपने क़ानून ऐसे लोगों के हवाले कर दिये जिनसे ग़लती मुमकिन नहीं थी। जितनों को क़ानून का मुहाफ़िज़ बनाया उन सबको पहले इस्मत का लिबास पहना दिया। अगर ख़ुदाई क़ानून के मुहाफ़िज़ों के किरदार का मुताला किया जाए तो ऐसे पुख़्ता किरदार, ऐसे बाउसूल, ऐसे एहतियात करने वाले मिलेंगे, जिनसे ग़लतियों का होना नामुमकिन था।

पिछला उसूल जो बयान हो चुका, यानी जब अहम क़ानून होता है, उसी एतेबार से क़ानून बनाने वाले के चुनाव में एहतियात रखी जाती है। अगर वक़्त के बादशाहों के हाथों में मुल्क की बागडोर आयी तो उनके लिए सिर्फ़ इतना काफ़ी समझा गया कि वह आम तौर से ग़लतियाँ न करते हों और नबियों और रसूलों के चुनाव में ये सामने रखा गया कि अगर किसी घिरे हुए वक़्त में किसी ख़ास क़ौम व मुल्क के लिए क़ानून बनाये गये तो उनकी हिफ़ाज़त करने वालों के बारे में ऐसे लोगों को काफ़ी समझा गया जो गुनाहों से तो हर हाल में पाक हों, लेकिन अगर उनसे तर्के औला हो जाए तो कोई हरज नहीं। अगर ग़ौर किया जाए तो तर्के औला न कर सकने वाला मुहाफ़िज़े क़ानून, क़ानून के फैलाने के एतेबार से नाक़िस या नुक़सान देने वाला नहीं ख़याल किया जा सकता। क्योंकि तर्के औला वह चीज़ है जो क़ानून के हिसाब से जुर्म नहीं होता बल्कि सिर्फ़ किसी बुलन्दतर दरज-ए-अमल के ख़िलाफ़ होता है इसलिए जब ये मतलब तर्के औला का हुआ, तो अब मान लिया जाए किसी दूसरे से भी ऐसे मुहाफ़िज़े क़ानून के किरदार के असर की वजह से तर्के औला हो गया, तो ज़ाहिर है कि न तो कोई दुनियावी, अख़लाक़ी, तहज़ीबी, गिरी हुयी हलाकत पैदा हुई और न आख़िरत का कोई नुक़सान हुआ। इसलिए ऐसे को मुक़न्निन और मुहाफ़िज़े क़ानून बना देना कोई चुनावी ग़लती, या ऐसे मुक़न्निन का तै कर दिया जाना बरबादी की वजह नहीं ख़याल की जा सकती। लेकिन जब मुल्कों और क़ौमों की हदों से आगे बढ़कर वसीअ क़ानून बनाये गये तो उसमें और ज़्यादा एहतियात रखी गयी। अब ऐसे मुहाफ़िज़े क़ानून बनाये गये जिनसे ज़िन्दगी के किसी लम्हे में कोई तर्के औला भी नहीं हुआ और जब वह हमेशा बाक़ी रहने वाली शरीअत आयी जिसको लागू करने के लिए मुक़द्दमे के तौर पर पिछली सभी शरीअतें आयी थीं, जो शरीअत जब से लागू की गयी उस वक़्त से ज़िन्दगी की इन्तेहा तक रहेगी। उसके हामिल और मुहाफ़िज़ ऐसे चुने गये जिनसे तर्के औला भी न हुआ हो जो अपनी ज़िन्दगी के हर-हर लम्हे में ज़िन्दगी के हर-हर हिस्से में मासूम रहे और ऐसे मासूम जिनसे तर्के औला न भूल कर और न जानबूझ कर किसी हालत में न हुआ। ✦✦✦

मुख्य समाचार

आसफ़ी इमामबाड़े में इण्टरनेशनल कुद्स-डे

18 सितम्बर 2009ई॰ रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी जुमा को क़िब्ल-ए-अव्वल यानी बैतुल मुक़द्दस की आज़ादी के लिए नमाज़े जुमतुल विदाअ् के बाद नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन के ज़ेरे एहतेमाम इमामबाड़ा आसफ़ी में क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद साहब कि क़यादत में एक एहतेजाजी जुलूस निकला और जल्सा हुआ। इण्टरनेशनल क़ुद्स-डे के मौक़े पर एहतेजाजी जल्से से ख़िताब करते हुए क़ाएदे मिल्लत ने कहा कि हम मुत्तहिद हैं। उन्होंने कहा कि तक़रीबन 60 साल से इस्तेमारी साज़िशों के नतीजे में क़ुद्स की मुक़द्दस सरज़मीन यहूदियों के क़ब्ज़े में है। वहाँ के लोग बेसरोसामानी की हालत में अरब मुल्कों में ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं और आए दिन इस्राईली दहशतगर्दी का शिकार हो रहे हैं।

इस मौक़े पर मुज़ाहेरीन, अमरीका और इस्राईल-एक से बढ़कर एक ज़लील और मुर्दाबाद के नारे लगा रहे थे और मुख़्तलिफ़ नारे लिखे हुए बैनरों को भी हाथों में लिये हुए थे।

यौमुल क़ुद्स इमाम ख़ुमैनी के हुस्ने अमल और इस्लामी सियासत का बेहतरीन नमूना है जिसके ज़रिये उन्होंने क़ुद्स के मसले को ठेकेदारों के हाथों से लेकर मिल्लत के हाथों तक पहुँचाकर सभी क़ाएदीन को बताया कि अगर क़यादत ख़यानत करने वाली हो तब भी क़ुद्स की आज़ादी मुमकिन है। क़िब्ल-ए-अव्वल की आज़ादी के लिए एक होकर एहतेजाज करना मुसलमानों का शरई फ़रीज़ा है इसलिए इस्लामी उम्मत को चाहिए कि इमाम ख़ुमैनी के ज़रिये तैय किये गये जुमतुल विदाअ् को इस्तेमारी, सहयूनी और साम्राजी ताक़तों के ख़िलाफ़ एक होकर यौमे क़ुद्स मनाएं। एक अरब से ज़्यादा मुसलमान एक होकर जब आवाज़ बुलन्द करेंगे तो ज़ालिम ताक़तों को झुकना पड़ेगा। इस मौक़े पर आल इण्डिया अली कांग्रेस और तन्ज़ीम पासदाराने हुसैन के कारकुनान भी ख़ास तौर से सरगर्मी के साथ शरीक थे।

यहूदियों का क़त्ल एक दिखावा है।

ये ड्रामा इस्राईल के क़याम के लिए किया गया था: डाक्टर महमूद अहमदी नेजाद

ईरान के राष्ट्रपति महमूद अहमदी नेजाद ने कहा कि यहूदियों का बड़े पैमाने पर क़त्लेआम एक दिखावा था और इसका ये ड्रामा इस्राईल के क़याम के लिए किया गया था और ईरान इससे निपटना मज़हबी फ़रीज़ा समझता है।

उन्होंने तेहरान युनिवर्सिटी में इस्राईल के क़याम के ख़िलाफ़ सालाना रैली यानी यौमे क़ुद्स के आख़िरी दिन शुरका को ख़िताब करते हुए कहा कि यहूदी ममलकत के क़याम के लिए पेश बन्दी और यहूदियों का बड़े पैमाने पर क़त्ले आम यानी 'होलोकास्ट' फ़र्ज़ी और झूठा था और ये अफ़सानों और नाक़ाबिले तस्दीक़ दावे की बुनियाद पर था। उन्होंने ये भी कहा कि इस्राईल के ख़िलाफ़ तहरीक ईरान का क़ौमी और मज़हबी फ़रीज़ा है।

जार्जबुश पर जूता फेंकने वाले इराक़ी पत्रकार मुन्तज़िर ज़ैदी रिहा हो गये

इराक़ के उस रिपोर्टर को जिसने अमरीका के राष्ट्रपति पर जूता फेका था, जेल से रिहा कर दिया गया। पिछले दिसम्बर में मुन्तज़िर ज़ैदी का ये क़दम अमरीका के पिछले राष्ट्रपति के बारे में बहुत से लोगों की चाहतों के बिल्कुल मुताबिक़ था। मुन्तज़िर ज़ैदी जब जेल से बाहर आये तो पार्लियामेण्ट के उन मेम्बरों ने उनसे मुलाक़ात की जो उनके नज़रिये की हिमायत करते हैं ये बात उनके भाई अदी ज़ैदी ने बतायी है। मुन्तज़िर ज़ैदी को तीन साल की क़ैद की सज़ा सुनाई गयी थी क्योंकि उन्होंने एक मेहमान सरबराह पर जूता फेंका था मगर इसके बाद उनकी सज़ा को कम करके एक साल कर दी गयी। एक इराक़ी आदालत ने पीर के रोज़ ज़ैदी की रिहायी का हुक्म दे दिया क्योंकि इराक़ी क़ानून के तहत जिन क़ैदियों को पहले सज़ा न हुई हो, जिन्हें एक साल क़ैद की सज़ा सुनाई गयी हो और जिनका बर्ताव अच्छा रहा हो वह सज़ा की मुद्दत का तीन चौथायी जेल में गुज़ारने के बाद रिहा कर दिये जाते हैं कई अरब मुल्कों के लोगों ने जूता फेंकने वाले मुन्तज़िर ज़ैदी को अपनी बेटी से शादी की पेशकश भी की है।

इस्राईल इन्सानियत का मुजरिमः
संयुक्त राष्ट्र संघ की चार रुकनी कमेटी की रिपोर्ट

संयुक्त राष्ट्र ने कहा है कि इस्राईल ने आठ महीने पहले ग़ज़्ज़ा पट्टी पर हमले के दौरान जंगी जराएम और इन्सानियत के ख़िलाफ़ जुर्मों का इरतेकाब किया था। हक़ाएक़ का पता लगाने वाली संयुक्त राष्ट्र की चार रुकनी कमेटी के सरबराह रिचर्ड गोल्डेन स्टोन ने नामा निगारों से बात करते हुए कहा कि उनकी कमेटी इस नतीजे पर पहुँची है कि इस्राईली फौज ने न सिर्फ़ जंगी जुर्म किया बल्कि उसने कुछ मामलों में इन्सानियत के ख़िलाफ़ जुर्म भी किये हैं। इस्राईल ने इस रिपोर्ट पर तबसेरा करते हुए कहा कि ये रिपोर्ट एकतरफ़ा है क्योंकि इसमें जुनूबी इस्राईल पर हमास के ज़रिये फेंके जाने वाले हज़ारों मीज़ाइलों को नज़रअन्दाज़ कर दिया गया। बयान में कहा गया है कि इन्हीं मीज़ाइली हमलों की वजह से इस्राईल की फ़ौजी कार्यवाही मुश्किल हो गयी थी। जुनूबी अफ़्रीक़ा के नामवर जज गोल्डेन स्टोन ने संयुक्त राष्ट्र की सलामती कोन्सिल से सिफ़ारिश की है कि वह इस्राईल को अपने फ़ौजियों के ज़रिये किये जोन वाले उन जंगी जुर्मों की जांच के लिए कहे। उन्होंने कहा कि यह जांच ग़ैर जानिबदाराना और बैनुलअक़वामी मेयार के मुताबिक़ होनी चाहिए इसके अलावा हुक़ूक़े इन्सानी के माहेरीन की एक कमेटी भी तशकील दी जाए जो उसकी कार्यवाइयों पर निगाह रखे।

रिपोर्ट में कहा गया है कि अगर इस्राईल ऐसा करने में नाकाम रहता है तो सलामती कोन्सिल को चाहिए कि ये मामला हैग में वाक़े बैनुल अक़वामी अदालत में पेश करे। रिपोर्ट में इस बात को तसलीम किया गया है कि हमास के मोर्टार और राकेट हमलों से जुनूबी इस्राईल में लोगों में डर पैदा हुआ है कुछ लोगों की जानें गयी हैं। कुछ ज़ख़्मी भी हुए हैं और कुछ इमारतों को नुक़सान पहुँचा है। मिस्टर गोल्डेन स्टोन ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि इस्राईल ने फ़िलस्तीनियों को एक साथ सज़ा देने के लिए ग़ज़्ज़ा की नाकाबन्दी कर दी हालांकि ग़ज़्ज़ा की 15 लाख आबादी में ज़्यादातर लोग मदद के सहारे ही ज़िन्दा हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि ग़ज़्ज़ा में इस्राईल की कार्यवाही का मक़सद सिर्फ़ हमास के कारकुनों को सबक़ सिखाना नहीं बल्कि सभी लोगों को सज़ा देना था और इस्राईली फ़ौजियों ने ग़ज़्ज़ा के लोगों की इज़्ज़त और वक़ार पर हमला किया। उनकी बेइज़्ज़ती की, ग़ैर क़ानूनी तौर पर क़ैद में रखा, इन्सानी ढाल के तौर पर इस्तेमाल किया, नस्लपरस्ताना और गंदी गालियाँ दीं। इन्सानी ढाल का इस्तेमाल जंगी जुर्म है। इस रिपोर्ट में इस्राईली फ़ौज के ज़रिये सफ़ेद फ़ासफ़ोरस के इस्तेमाल, ग़ज़्ज़ा में संयुक्त राष्ट्र के दफ़्तर पर गोलाबारी करने और अलक़ुद्स अस्पताल पर जानबूझकर हमला करने की भी नुक़ताचीनी की गयी है।

जून 2006ई० में हमास ने गेला दुशालत नामी जिस इस्राईली फ़ौजी को गिरफ़्तार किया था उसे जंगी क़ैदी की हैसियत हासिल है इसलिए उसके साथ जिनेवा कन्वेन्शन के मुताबिक़ ही सुलूक किया जाए। इस रिपोर्ट के जारी होने के बाद एमेंस्टी इण्टरनेशनल ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र को चाहिए कि वह क़ुसूरवारों के ख़िलाफ़ फ़ौरन कारवाई करे। एमेंस्टी इण्टरनेशनल ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र इन्सानी हुक़ूक़ कोन्सिल को चाहिए कि इस रिपोर्ट की जांच करके संयुक्त राष्ट्र के सचिव बान की मूनसे इसे सालमती कोन्सिल में पेश करने के लिए कहे।

मारूफ़ सहाफी सै0 महमूद नक़वी न रहे...

4 शव्वाल 1430हि० मुताबिक़ 24 सितम्बर 2009ई० जुमेरात को सुबह के वक़्त आयतुल्लाहिल उज़्मा सैय्यिदुल उलमा सै० अली नक़ी नक़वी ताबा सराह के दामाद और प्रोफ़ेसर अल्लमा अली मुहम्मद नक़वी साहब के बहनोई जनाब महमूद नक़वी साहब का लम्बी बीमारी के बाद इन्तेक़ाल हो गया उनकी उम्र 68 बरस थी। महमूद नक़वी साहब दानिश्वर और अदीब होने के साथ-साथ एक कामयाब सहाफ़ी भी थे। वह अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी से उर्दू और अंग्रेज़ी में M.A. करने के बाद 1965ई० से दिल्ली ही में रहने लगे थे लेकिन इन्तेक़ाल के कुछ महीने पहले वह अपने बेटे के पास लखनऊ आ गये थे यहाँ उनके गुर्दे की बीमारी की वजह से डायलेसिस चल रहा था वह दिल्ली एडमिनिस्ट्रेशन में बड़े ओहदोंपर फ़ायज़ रहने के बाद रिटायर हुए। महमूद साहब अच्छे इन्सान होने के साथ-साथ अच्छे शायर भी थे और आख़री वक़्त तक अन्जुमन वज़ीफ़-ए-सादात व मोमिनीन के जनरल सेक्रेट्री भी रहे इसके अलावा आप ख़ास तौर से पन्द्रह रोज़ा रिसाले 'हदीसे दिल' के चीफ़ एडिटर और नस्र व नज़्म में कई किताबों के लेखक भी थे। उनकी तदफ़ीन दारुस्सलामे हिन्द इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमआब लखनऊ में 24 सितम्बर को ही रात में 11 बजे के क़रीब एक बड़े मजमे की मौजूदगी में हुई। इस मौक़े पर तदफ़ीन के फ़ौरन बाद इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमआब में स्थित दफ़्तर नूरे हिदायत फाउण्डेशन में क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद साहब की सदारत में एक ताज़ियती जल्सा हुआ जिसमें नूरे हिदायत फाउण्डेशन के कारकुनान के अलावा ख़ास तौर से महमूद नक़वी साहब के बहनोई प्रोफेसर अल्लामा अली मुहम्मद नक़वी साहब भी मौजूद थे जल्से में क़ाएदे मिल्लत के बाद प्रोफेसर अल्लामा अली मुहम्मद नक़वी साहब ने और मौलाना असीफ़ जायसी साहब ने महमूद नक़वी साहब की ज़िन्दगी के मुख़्तलिफ़ पहलुओं का तज़किरा किया आख़िर में फ़ातेहाख़्वानी की गयी। इदारा मोमिनीन से मरहूम की रूह को ईसाले सवाब के लिए फ़ातेहा ख़्वानी की दरख़्वास्त करता है और अल्लाह से दुआ करता है कि मुहम्मदस० व आले मुहम्मदअ० के तुफ़ैल में मरहूम का दर्जा बलन्द फ़रमाये और उनके पसमन्दगान को इस हादसे पर सब्र करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।